लेख

फ़ोटो: अक्षरा

चल चलें मेले में

युवती मेला: प्रभावकारी सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम

वीणा शिवपुरी

कहते है ना कि जो कुछ कक्षा, किताबें और मास्टरनी जी नहीं सिखा पातीं वह खेल-खेल में बड़ी आसानी से सीखा जा सकता है। क्यों न हो। खेल के समय माहौल हल्का-फुल्का होता है। सखी-सहेलियों का साथ होता है। हंसी-मज़ाक और आनंद होता है। ऐसी ही सीखने-सिखाने की एक जगह है- युवती मेला।

युवती मेला: क्या और क्यों?

जैसा कि नाम से ज़ाहिर है कि यह एक मेला है और युवतियों के लिए है। युवती यानी 16 से 25 वर्ष की आयु की लड़कियां। इस उम्र के दौरान हम लड़कियों के शरीर के भीतर और बाहर बदलाव आते हैं। मन और भावनाओं में उथल-पुथल होती है। हमारे प्रति परिवार और समाज के लोगों की नज़र और उनका बर्ताव बदलने लगता है। घर और बाहर दोनों जगह हमारी भूमिका भी बदलती है। अब बचपना खत्म होकर हम युवाओं की गिनती में आ जाती हैं। हमसे उम्मीदें की जाती हैं, हम पर ज़िम्मेदारियां डाली जाती हैं। अनेक युवतियां तो ब्याह कर ससुराल के अजनबी वातावरण में पहुंच चुकी होती हैं। कुल मिलाकर यह दौर अनेक बदलावों का दौर है।

ये सारी चीज़ें काफी परेशान कर देती हैं। कारण यह है कि अपने ही मन, शरीर और सामाजिक भूमिका के बारे में हमारी जानकारी नहीं के बराबर होती है। शरीर के भीतर क्या घट रहा है, मन बेचैन क्यों रहता है, अजीब

मूल खेलः छल्ला फेंक

'छल्ला फेंक' आमतौर पर मेलों में या समुद्र के किनारे खेलते हुए देखा जा सकता है। इसमें खिलाड़ी ज़मीन पर रखे हुए घरेलू इस्तेमाल के छोटे-छोटे इनामों पर एक छल्ला फेंकने की कोशिश करता है। यह खेल खिलाड़ी की सही निशानेबाज़ी की परख करता है। हर खिलाड़ी को तीन छल्ले मिलते हैं। आमतौर पर इनामों की दूरी तथा छल्लों के हल्केपन के कारण सही निशाना लगा पाना कठिन होता है।

रूपान्तरित खेलः स्वयंवर/दूल्हा चुनो

रूपान्तरित खेल में खेल का बुनियादी ढांचा वही रहता है बस इसका उद्देश्य इनाम जीतने के स्थान पर चर्चा का विषय चुनना हो जाता है। इस खेल में एक बड़े कपड़े पर ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली की रूपरेखा बनी हुई होती है। ताश की ईंट के आकार के इसके खानों में संख्याएं लिखी होती हैं। सामने दीवार पर लगे चार्ट पर इन संख्याओं की व्याख्या लिखी होती है। छोटे घरेलू इनामों की जगह यहां रूई भरे हुए छोटे 'दिल' होते हैं। छल्ला फेंक की तरह यहां भी भागीदारी/खिलाड़ी को बांस के बने तीन छोटे छल्ले, चीज़ों पर यानी रूई भरे दिलों पर फेंकने होते हैं।

फ़ोटोः अक्षरा

उद्देश्य

इस खेल का उद्देश्य युवतियों की शादी तथा रिश्तों से जुड़ी आकांक्षाओं, डरों तथा उम्मीदों को बाहर निकालना है। जन्म कुंडली के प्रतीक का इस्तेमाल इसलिए किया गया है क्योंकि प्रायः शादी से पहले दूल्हे और दुल्हन की कुंडली मिलायी जाती है। अधिकतर युवतियों के जीवन साथी के चुनाव में उनकी अपनी पसंद के लिए कोई खास जगह नहीं होती। दीवार पर लगे चार्ट में शादी से जुड़ी विभिन्न परिस्थितियां, विकल्प और चुनाव दिए जाते हैं। उद्देश्य यह है कि भागीदार यह सोचे कि उसे शादी तथा अपने जीवनसाथी से क्या आशाएं हैं। इस खेल के पीछे छिपा संदेश यह भी है कि एक लड़की स्वयं अपनी कुंडली लिख सकती है या अपने जीवन की दिशा तय कर सकती है।

सी इच्छाएं और संवेदनाएं क्यों उठ रही हैं। इन सबके बारे में बताने वाला कोई नहीं होता। मां, चाची, ताई या सास कुछ बात करती भी हैं तो वह डांट और टोका-टाकी के रूप में ही होती है। सिर्फ़ सहेलियों के साथ अपने मन के डर संशय और सवाल बांटे जा सकते हैं। वह भी छिपते-छिपाते कानाफूसियों में। उनसे जो जानकारी मिलती भी है वह अधकचरी और कई बार बिल्कुल गलत होती है, जिनसे शरीर, यौन संबंध, स्त्री-पुरुष के रिश्ते जैसे अहम विषयों पर गलत सोच बन सकती है।

यह एक बड़ा कारण है, जिसके चलते हमारे समाज में लड़कियों की (और लड़कों की भी) किशोर/युवा अवस्था बहुत तनावपूर्ण होती है। औरतों/बच्चों के साथ काम करने वाले समूहों ने यह महसूम किया कि इस आयु वर्ग की लड़कियों को शिक्षा/सूचनाओं की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है।

मूल खेलः नौ डिब्बे (नाइन पिन्ज़)

'नौ डिब्बों का खेल', खिलाड़ी के निशाने और दूरी के अनुमान को परखता है। नौ डिब्बे अथवा बोतलें एक त्रिभुज के आकार में एक के ऊपर एक जमाई जाती हैं। नीचे की पंक्ति में चार, उसके ऊपर तीन और फिर दो बोतलें रखी जाती हैं। खिलाड़ी को तीन मौके मिलते हैं जिसमें वह एक नर्म गेंद मारकर उन डिब्बों/बोतलों को गिराने की कोशिश करती है। हर बार जब सभी बोतलें गिर जाती हैं, तो खिलाड़ी को नम्बर मिलते हैं।

रूपान्तरित खेलः फाइटर हमेशा जीतता है

खेल का बुनियादी ढांचा वही रहता है केवल बोतलों के स्थान पर डिब्बे रखे जाते हैं। भागीदार उसी प्रकार से डिब्बों के पूर त्रिभुज को गिराने के लिए गेंद से निशाना साधती है। डिब्बों को फिर से जमाना आसान होता है। तथा उन्हें अलग-अलग रंगों से रंगा जाता है। डिब्बों पर लिखी संख्याएं चार्ट पर भी होती हैं। भागीदारी द्वारा चार्ट पर लिखी टिप्पणी पढ़कर उसमें से एक संख्या चुनने के लिए कहा जाता है। वह चुने हुए नम्बर के डिब्बे को अपनी गेंद का निशाना बनाती है। उसे तीन गेंदे या तीन मौके मिलते हैं जिनमें उसे अपने चुने हुए डिब्बे/टिप्पणी को निशाना बनाना होता है।

नीचे कुछ टिप्पणियों/संदेशों के उदाहरण दिए गए हैं। रूपान्तरित खेल का उद्देश्य औरतों को सामाजिक भेदभाव की पहचान करने तथा अपना विरोध जतलाने के लिए प्रोत्साहित करना है। गेंद को फेंककर उस पर मारना विरोध का प्रतीक है।

1. ओह, फिर से बेटी नहीं।
2. बेटे परिवार का नाम चलाते हैं।
3. आगे क्यों पढ़ना है? तुम्हें तो शादी करनी है।
4. कॉलेज जाने की जगह, घर का कामकाज सीखो।
5. दहेज ही औरत का उत्तराधिकार है।
6. लड़के घर का काम नहीं करते।
7. तुम्हारा परिवार जानता है कि तुम्हारी भलाई किसमें है।
8. अंधेरे से पहले घर लौट आना।
9. अपने भाई से बराबरी मत करो।
10. लड़कियों के लिए शादी करना ज़रूरी है।
11. एक बार तुम्हारी शादी हो जाए फिर हमारी ज़िम्मेदारी नहीं हो।
12. मर्दों को अपनी भूमिका निभाने दो और औरतों को अपनी।
13. लिंगों के बीच ऊंच-नीच होना दुनिया का तरीका है।
14. बासी खाना मर्दों को नहीं दिया जा सकता।

फ़ोटोः अक्षरा

उद्देश्य

औरतें गेंदों के खेल शायद ही कभी खेलती हैं। उद्देश्य यह नहीं है कि सभी डिब्बों को गिराया जाए बल्कि सामान्य रूप से होने वाले भेदभावों की पहचान करके उन पर बातचीत करना है। जब एक भागीदार अपने चुने हुए भेदभाव की ओर गेंद का निशाना लगाती है तो वह उस पर अपना गुस्सा दिखाकर उसका विरोध कर रही होती है। उसके तीन चुनाव की ही कार्यकर्ताओं तथा अन्य भागीदारों के साथ चर्चा का आधार बनते हैं।

मूल खेलः शहर पर बमबारी

'शहर पर बमबारी' खेल 'चार कोनों खेल' से मिलता जुलता है। चार शहरों के नामों वाली पर्चियां कमरे के चार कोनों में रख दी जाती हैं। खेल संचालिका टेप या रेडियो पर संगीत बजाती है और भागीदारों से कहती है कि वे कमरे में एक बड़े गोले में दौड़ें। जैसे ही संगीत बंद होता है सभी भागीदार बचाव के लिए कमरे के किसी कोने की ओर दौड़ पड़ती हैं। संचालिका अपने पास मौजूद चार पर्चियों में से एक उठाकर उस पर लिखे शहर का नाम पढ़ती है और उस शहर वाले कोने की सभी भागीदार खेल से बाहर हो जाती हैं। एक बार फिर से संगीत शुरू होता है और भागीदार दौड़ने लगती हैं। अंत में बचने वाली एकमात्र भागीदार को विजयी माना जाता है।

रूपान्तरित खेलः विचारधारा बदलो/मिथकों पर बमबारी

बमबारी का अर्थ है किसी चीज़ को नष्ट करना। हम समाज में प्रचलित जैव आधारित जेंडर की धारणा को नष्ट करना चाहेंगे। खेल का मूल ढांचा वही रहता केवल शहरों के नामों की जगह जेंडर भूमिका से जुड़ी आम लोकोक्तियों की पर्चियां होती हैं। खेल संचालिका संगीत शुरू करती है और भागीदार कमरे में दौड़ने लगती हैं। जब संगीत बंद होता है तो उन्हें तुरन्त किसी कोने में जाना होता है। भागीदारों की संख्या के हिसाब से चार या छः कोने तय किए जा सकते हैं। प्रत्येक कोने अथवा नियत स्थान पर एक चर्चा पर कोई आम लोकोक्ति लिखी होती है। कार्यकर्ता इन लोकोक्तियों वाली छः पर्चियों में से एक चुनती है और पढ़कर सुनाती है। उस लोकोक्ति वाले कोने में खड़ी भागीदार उस मिथक के पक्ष में बोलती है जबकि बाकी सब उसका विरोध करती हैं। आमतौर पर खूब जोशपूर्ण बहस शुरू हो जाती है।

कुछ मिथक जिन पर 'बमबारी' की जा सकती है निम्न हैंः

1. पुरुष बेहतर होते हैं।
2. औरतों को बच्चों की तरह कभी-कभी पीटना पड़ता है।
3. पुरुष ज़्यादा अक्लमंद होते हैं इसलिए वे अगुवाई करते हैं।
4. दहेज एक सामाजिक रिवाज है इसलिए इसका पालन करना चाहिए।
5. घरेलू हिंसा एक पारिवारिक मामला है।
6. शराबखोरी के कारण हिंसा होती है।
7. औरतों का बलात्कार प्रायः अजनबी लोग करते हैं।
8. भड़काऊ कपड़े पुरुषों को औरतों को छेड़ने के लिए उकसाते हैं।
9. औरतों को अंधेरा होने से पहले घर लौट आना चाहिए।
10. परिवार के भीतर औरतों के साथ कोई हिंसा नहीं होती।

उद्देश्य

यह खेल कार्यवाही तथा चर्चा का इस्तेमाल करके घरेलू व यौन हिंसा तथा समाज की गलत जेंडर धारणाओं से पर्दा उठाता है। चर्चा के लिए दो समूह बनाए जाते हैं- एक मुद्दे के पक्ष में और एक-विपक्ष में जिससे एक दमदार बहस को बढ़ावा मिलता है।

शुरूआत में व्यस्क औरतों के साथ काम करने वाली संस्थाओं ने परिवार की किशोरियों/युवतियों को भी अपने साथ जोड़ा। इससे काफी फायदा मिला। उनकी जानने-समझने की इच्छाओं और सवालों का पता चला लेकिन इसमें कमियां भी दिखाई दीं। परिवार की बड़ी औरतों के समाने युवतियां खुलकर अपने मन की बात नहीं कर पातीं। कार्यकर्ताओं के लिए भी उनकी मौजूदगी में यौन संबंध, गर्भ निरोधक, जेंडर भेदभाव जैसे मुद्दे उठाना मुश्किल होता है। लड़कियों के लिए अलग संस्थाएं बनाने या बैठकें आयोजित करने की भी अपनी समस्याएं थीं। सुबह का समय स्कूल, काम या घरेलू ज़िम्मेदारियों में चला जाता है। शाम को उनके अकेले आने-जाने पर बंधन होते हैं। इन सबका समाधान एक बड़े रोचक विचार में मिला। वह था युवती मेला।

फोटो: अक्षरा

इसका श्रेय मुंबई की संस्था 'अक्षरा' को जाता है। उनका कहना है कि युवती मेले का विचार 1997 में रांची में हुए महिला आंदोलन के राष्ट्रीय सम्मेलन में पैदा हुआ। सम्मेलन से लौटते समय सबको महसूस हुआ कि यहां सभी सरोकार औरतों से जुड़े थे। युवतियों से जुड़े मुद्दे बांटने और उन पर चर्चा करने के लिए कोई जगह नहीं थी। जबकि आज की किशोरियां/युवतियां कल की औरतें हैं। यही उम्र है जब उनकी सोच और रवैये बनते और पक्के होते हैं। इसी उम्र में उनके मन में भय और कमतरी का अहसास घर कर सकता है। जबकि इसी उम्र में वे अपनी ताकत और अहमियत के प्रति सचेत हो सकती हैं। इसलिए उन्हें एक ऐसी जगह देने की बहुत ज़रूरत है जहां वे खुलकर बात कर सकें। अपने सरोकारों को स्वर दें और जेंडर न्याय से जुड़े मुद्दों पर अपनी समझ साफ कर सकें। यहां वे रणनीतियों पर चर्चा कर सकती हैं। एक जुट हो सकती हैं। युवती मेले ने युवा औरतों को एक ऐसा मंच दिया, जहां मेलों में खेले जाने वाले प्रचलित खेलों के ज़रिए उनके नारीवादी नज़रिए को तराशा जा सके।

मेले सदियों से हमारे सामाजिक जीवन का एक हिस्सा रहे हैं। मेला और मंदिर ही शायद ऐसी दो जगहें हैं जहां प्रायः लड़कियों/औरतों को अपनी सहेलियों के साथ जाने की छूट होती है। मेले के साथ जुड़ी होती है खेल-कूद, मौज-मस्ती की भावना जो उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती है।

युवती मेलाः प्रक्रिया और फायदे

यह एक दिन भर का कार्यक्रम है जो रविवार या किसी छुट्टी के दिन आयोजित किया जा सकता है। इसके लिए एक बड़ा हॉल या मैदान चाहिए जहां छोटे-छोटे स्टाल या दुकानें लगाई जाती हैं। इन स्टालों पर अलग-अलग खेल खिलाए जाते हैं। एक दो युवतियां खेल में हिस्सा लेती हैं और बाकी दर्शक होती हैं। हर स्टॉल कम से कम दस युवतियों को व्यस्त रख सकता है। खेलों के ज़रिए कुछ मुद्दे उठाए जाते हैं और फिर होती है उन पर खुली बातचीत। बातचीत में दर्शक युवतियां भी अपनी बात कह सकती हैं। यह सारी प्रक्रिया चलाने और चर्चा को सही दिशा देने के लिए हर स्टाल पर एक प्रशिक्षित कार्यकर्ता का मौजूद होना ज़रूरी है।

इस प्रकार मेला आयोजित करने के लिए स्थान के अलावा खेलों की सामग्री और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की भी ज़रूरत होती है।

खेल हम सबके जाने-पहचाने होते हैं जैसे सांप-सीढ़ी, छल्ला फेंक वगैरह लेकिन उनका रूप कुछ अलग होता है। इन खेलों को युवतियों के जीवन से जुड़े कुछ अहम मुद्दों के चारों ओर बनाया जाता है।

मिसाल के लिए –

- औरतों व मर्दों के बीच काम का मौजूदा बंटवारा
- लड़कियों के साथ होने वाली छेड़छाड़
- लड़कियों के सपने और जीवन लक्ष्य
- सही जीवनसाथी का चुनाव
- लड़कियों के साथ होने वाला भेदभाव
- घिसी पीटी सोच/भूमिका

युवती मेले में खेलों के स्टॉलों के अलावा अलग-अलग मुद्दों से जुड़े सूचना कक्ष भी होते हैं जहां चित्रों, पोस्टरों, चार्टों आदि की मदद से खास विषयों के बारे में सूचनाएं दी जाती हैं। अपनी इच्छा और रुचि के हिसाब से युवतियां उन कक्षों में जाकर हर विषय पर जानकारी हासिल कर सकती हैं। सवाल पूछ सकती हैं। यहां शरीर, स्वास्थ्य, यौन संक्रमण, यौन संबंध, गर्भ तथा गर्भ निरोधक, कानूनी अधिकार, सामाजिक सोच मिथक जैसे अनेक विषयों पर जानकारी मिल सकती है। वे इनसे जुड़े अपने डर और गलतफ़हमियां दूर कर सकती हैं। एक स्वस्थ जागरूक सोच पा सकती हैं।

- युवती मेला युवतियों से सम्पर्क साधने, उनसे बात करने, उन्हें सोचने पर मजबूर करने और उनके मन की बात जानने का लाजवाब तरीका है।
- इसमें बहुत बड़ी संख्या में युवतियां भाग ले सकती हैं जो कार्यशाला/बैठकों में संभव नहीं है। दिन भर चलने वाले मेले में युवतियों के समूह लगातार आते और जाते रह सकते हैं। इस प्रकार एक मेला 500 से 1000 युवतियों से जुड़ सकता है।
- युवती मेले का माहौल मौज मस्ती का होता है। वहां सभी युवतियां हम-उम्र होने के कारण बेझिझक बात कर सकती हैं।
- गंभीर वातावरण की तुलना में यहां वे आसानी से मुद्दों को समझ लेती हैं। साथ ही शंकाओं का समाधान करने के लिए सवाल भी पूछ सकती हैं। जो शायद वे किसी कार्यशाला बैठक या कक्षा के माहौल में न कर पाएं।
- युवती मेले के खेलों और सूचना कक्षों को किसी क्षेत्र विशेष की समस्याओं के हिसाब से बदला या नया रूप दिया जा सकता है। यह सिर्फ़ एक खाका है जिसमें हर संस्था अपनी ज़रूरत के हिसाब से रंग भर सकती है।

नोटः अन्य स्थानों पर युवती मेला के अनुभव को दोहराने में सहायक होने के उद्देश्य से अक्षरा ने 'युवती मेला जेंडर समानता के लिए खेल तथा प्रशिक्षण' नामक पुस्तक प्रकाशित की है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्कः
अक्षरा
501, नीलाम्बरी रोड संख्या-86
दादर (पश्चिम) मुंबई - 400 028
दूरभाषः 022-24316082
ई-मेलः aksharacentre@vsnl.com

वीणा शिवपुरी *अनुवाद-सम्पादन के साथ-साथ महिला संबंधी मुद्दों पर लिखती हैं।*